IJMRSETM

e-ISSN: 2395 - 7639

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

Volume 11, Issue 2, February 2024

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.580

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 11, Issue 2, February 2024 |

घनानंद के काव्य में प्रेम संवेदना

Dr.Ruchi Kashyap

Assistant Professor, Dept. Of Hindi, SS Jain Subodh College Of Global Excellence, Sitapura, Jaipur, Rajasthan, India

सार

रीतिमुक्त काव्यधारा में घनानंद का स्थान सर्वोच्च है। वे हिन्दी साहित्य में 'प्रेम की पीर' के कवि के रूप में स्थापित हैं। घनानंद मूलतः वियोग के कवि हैं। उन्होंने अपने साहित्य में बिहारी आदि की तरह संयोग व मिलन के चित्र नहीं खींचे हैं बल्कि प्रेम की पीड़ा को व्यक्त किया है। शुक्ल लिखते हैं कि:

"ये वियोग शृंगार के प्रधान मुक्तक कवि हैं।"इसी प्रकार, यह भी कहा जा सकता है कि इनका साहित्य स्वानुभूति का साहित्य है न कि सहानुभूति का। अपनी प्रेमिका सुजान के विरह में कविताएँ रचने वाले घनानंद के बारे में दिनकर जी लिखते हैं,"दूसरों के लिये किराए पर आँसू बहाने वालों के बीच यह एक ऐसा कवि है जो सचमुच अपनी पीड़ा में रो रहा है।"

परिचय

रीतिमुक्त काव्यधारा में घनानंद का स्थान सर्वोच्च है। वे हिन्दी साहित्य में 'प्रेम की पीर' के कवि के रूप में स्थापित हैं। इन्होंने लगभग 39 रचनाएँ लिखीं जिनमें 'सुजानहित', 'ब्रज-विलास', 'विरहलीला' प्रधान हैं।

यहाँ चर्चा का विषय यह है कि प्रेम व शृंगार पर तो सभी रीतिकालीन कवियों ने रचनाएं की हैं, किंतु घनानंद को 'प्रेम की पीर' का कवि क्यों कहा जाता है? इस संबंध में यदि उनके शृंगार वर्णन की विशिष्टताओं पर गौर किया जाए तो निश्चित ही वे 'प्रेम की पीर' के कवि के रूप में दिखाई पड़ते हैं।

उपरोक्त चर्चा के संदर्भ में पहला प्रमाण यह है कि घनानंद मूलतः वियोग के कवि हैं। उन्होंने अपने साहित्य में बिहारी आदि की तरह संयोग व मिलन के चित्र नहीं खींचे हैं बल्कि प्रेम की पीड़ा को व्यक्त किया है। शुक्ल लिखते हैं कि "ये वियोग शृंगार के प्रधान मुक्तक कवि हैं।"[1]

इसी प्रकार, यह भी कहा जा सकता है कि इनका साहित्य स्वानुभूति का साहित्य है न कि सहानुभूति का। अपनी प्रेमिका सुजान के विरह में कविताएँ रचने वाले घनानंद के बारे में दिनकर जी लिखते हैं, "दूसरों के लिये किराए पर आँसू बहाने वालों के बीच यह एक ऐसा कवि है जो सचमुच अपनी पीड़ा में रो रहा है।"

'प्रेम की पीर' का कवि कहलाने के पक्ष में एक तर्क यह भी है कि इनका प्रेम वर्णन वैधानिकता, अति-भावुकता व अपने साथी के प्रति एकनिष्ठता से युक्त है-

"अति सूधो सनेह को मारग है
जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं"

घनानंद के यहाँ विरह की पीड़ा इतनी तीव्र है कि यह प्रतीक रूप में उनके साहित्य में सर्वत्र दिखाई देती है। सुजान के प्रति जो लौकिक प्रेम था, बाद में वही कृष्ण-राधा के प्रति अलौकिक स्तर पर व्यक्त होने लगा। पीड़ा इतनी गहरी है कि राधा-कृष्ण भक्ति के प्रसंग में भी सुजान के विरह को व्यक्त करते रहे-

"ऐसी रूप अगाधे राधे, राधे, राधे, राधे, राधे
तेरी मिलिवे को ब्रजमोहन, बहुत जतन हैं साधे।"

इस प्रकार विरह की गहरी अनुभूति, वैयक्तिकता, एकनिष्ठता, तीव्र भावुकता व स्वानुभूति जैसे तत्त्व घनानंद को 'प्रेम की पीर' के कवि के रूप में स्थापित करते हैं।

रीतिकाल में प्रमुख तीन काव्य धाराएँ थी- रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त। कवि घनानंद रीतिमुक्त काव्यधारा के अग्रणी कवि थे। कवि के व्यक्तित्व और कृतित्व की रचना उनके कवित्व ने स्वयं ही की है-

"लोग हैं लागि कवित्त बनावत, मोहे तौ मेरे कवित्त बनावत"

अनुमान से इनका जन्म का समय संवत् 1730 के आसपास माना जाता है। इनका जन्म बुलंदशहर के एक कायस्थ परिवार में हुआ था। घनानंद युवावस्था में ही दिल्ली चले गए और अपनी प्रतिभा के बल पर मुगल सम्राट मुहम्मद शाह रंगीला के मीर मुंशी बन गए। घनानंद कविता में निपुण और सिद्ध संगीतकार थे। मुग़ल दरबार में इनका काफी सम्मान बढ़ गया था जिसके कारण अन्य दरबारी इनके विरोधी हो गए थे। वे घनानंद को दरबार से निकलवाना चाहते थे।

एक दिन दरबारियों ने राजा से कहा- मीर मुंशी बहुत अच्छा गाते हैं। बादशाह ने उन्हें गाने के लिए कहा किन्तु घनानंद बादशाह के बात को टालते रहे। यह देखकर दरबारियों ने बादशाह को बताया कि मीरमुंशी 'सुजान' के कहने पर अवश्य गायेंगे। सुजान बादशाह के दरबार में नर्तकी थी। सुजान के कहते ही कवि घनानंद सुजान कि ओर मुख और बादशाह की ओर पीठ करके बहुत ही अच्छे सुर में गाना गाने लगे। उनके संगीत को सुनकर बादशाह और सभी दरबारी मन्त्र-मुग्ध हो गए परन्तु पीठ फेर कर गाने की इस बे-अदबी के कारण नाराज होकर बादशाह ने घनानंद को दरबार छोड़ने का आदेश दे दिया। घनानंद ने सुजान को भी अपने साथ चलने के लिए कहा लेकिन नर्तकी सुजान ने घनानंद के इस आग्रह को ठुकरा दिया। सुजान के इस विश्वसघात से घनानंद को बहुत धक्का लगा। इसी गहरे दुःख के कारण वे विरक्त होकर वृन्दावन चले गए। वहीं वे वृन्दावन में निम्बार्क वैष्णव संप्रदाय में दीक्षित हो गए। वृन्दावन जाने के बाद उनके मन को शांति मिली और सुजान का प्रेम, राधा-कृष्ण के प्रेम में परिवर्तित हो गया।

घनानंद 'स्वछंद मार्गी' प्रेमी कवि थे। प्रेम के कई रूप होते हैं,

नेह – छोटों के प्रति प्यार,

प्रीत – इश्क, मुहब्बत अपने बराबर वालों के साथ,

प्रेमी – प्रेमिका-पत्नी का संबंध,

श्रध्दा – भक्ति-ईश्वर के साथ प्रेम आदि।[2]

प्रेम अमूर्त विषय है। इसे वाणी से नहीं भावों से ही अभिव्यक्त किया जा सकता है। हर व्यक्ति प्रेम का भूखा होता है। कवि घनानंद को भी मुग़ल दरबार की नर्तकी सुजान से प्रेम हो गया था। कवि ने सुजान के सौंदर्य के आधार पर सुन्दरता के अनेक दशाओं की व्यंजना की है। कवि अपनी नायिका की विशेषता बताते हुए कहते हैं–

रावरे रूप की रीति अनूप, नयो-नयो लागै ज्यों-ज्यों निहारियै।

त्यों इन आंखिन बानि अनोखी अधानि कहूँ नहिं आन तिहारिये।

कवि कहते हैं- प्रिय के सुन्दर रूप से प्रियतम को कभी भी तृप्ति नहीं मिलती है। वह जीतनी बार भी उसे देखता है उतनी बार उसे नई लगती है। जब से सुजान को घनानंद ने देखा है तब से उनकी आँखें किसी और को देखना ही नहीं चाहती है। उनके आँखों में सिर्फ सुजान ही बसी थी। घनानंद की कविता में सुजान की परम प्रेम की व्यख्या है। घनानंद स्वयं प्रेमी थे। उनका सुजान से गहरा और एक तरफा प्रेम था।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 11, Issue 2, February 2024 |

अति सूधो सनेह को मारण है, जहाँ नेकु सयानप बांक नहीं।

तहाँ सांचे चलै तजि आपनयौ झझकै कपटी जे निसांक नहीं।।

घनानंद की कविता का प्राण उनकी प्रेम की विरहानुभूति थी। घनानंद की कविता में प्रेम के पीर की अनेक रूप विधमान हैं। घनानंद के जीवन में प्रेम का स्थान बहुत ही ऊँचा था। उनका सम्पूर्ण जीवन काव्य प्रेम रुपी रस से ओत-प्रोत था। इनका प्रेम सामान्य नहीं उदात्त था। इन्होंने सुजान के पेशे से नहीं, सुजान से प्रेम किया था। घनानंद ने सुजान से नकारात्मक प्रतिक्रिया पाकर भी प्रेम करना नहीं छोड़ा बल्कि उन्होंने सुजान के प्रेम को अपनी रचनाओं में पिरोकर उसे और भी अमर बना दिया। प्रेम के मार्ग में इन्हें जो दुःख और पीड़ा मिली उससे वे निराश नहीं हुए बल्कि और भी उत्साह से प्रेम के पथ पर आगे बढ़ते चले गए। घनानंद ने अपने प्रेम को आध्यात्मिकता की पराकाष्ठा तक पंहुचा दिया। घनानंद ने जिस तरह प्रेम रूपी सागर में डूबकर सुजान से प्रेम किया उसी तरह आध्यात्म रूपी सागर में डूब कर भगवान श्री कृष्ण से भक्ति किया। घनानंद ने प्रेम और भक्ति के बीच की रेखाओं को मिटा दिया। इनका लौकिक प्रेम कब अध्यात्मिक प्रेम में बदल गया यह उन्हें भी नहीं पता चला। घनानंद को प्रेम में पीड़ा मिलती है लेकिन उस पीड़ा में ही वे आनंद का अनुभव करते हैं। प्रेम को ये साधना का दर्जा देते हैं तथा प्रेम के दोनों ही पक्षों (संयोग और वियोग) को सम्पूर्णता से अनुभव करते हैं। वे 'संयोग' का अनुभव जिस तन्मयता के साथ करते हैं, 'वियोग' का भी अनुभव उसी तन्मयता के साथ करते हैं। घनानंद के प्रेम में पलायन का भाव कहीं भी नहीं मिलता है और न ही निराशा दिखाई देती है। प्रेम में विरह से पलायन के लिए मृत्यु का वरन करना तो इनकी दृष्टि में कायरता थी। इसीलिए घनानंद ने प्रेम के दो परम्परागत आदर्श के प्रतीक माने जाने वाले 'मछली' और 'पतंग' की भर्त्सना (फटकार) की है-

"हमें मरिबो बिसराम गनै वह तो बापुरो मीट तज्यौ तरसै।

वह रूप छठा न सहारि सकै यह तेज तवै चितवै बरसे।

घनआनंद कौन अनोखी दसा मतिआवरी बावरी ह्वै थरसै।

बिछुरे-मिले मीन-पतंग-दसा खा जो जिय की गति को परसै।।"

सुख हो या दुख, दोनों की तीव्र और अत्यधिक घनीभूत अनुभूति वर्णनातीत हो जाती है। घनानंद की प्रेमानुभूति भी ऐसी ही है जिससे इनकी कविताओं में काफी कुछ मौन से ही सम्प्रेषित हो जाता है। घनानंद की बात (काव्य का कथ्य) रुपी दुल्हन, ऊर रुपी भवन में मौन का घूँघट डालकर बैठी रहती है। कोई काव्य मर्मज्ञ 'सुजान' ही इसे प्राप्त कर सकता है। –

"उर भौन में मौन को घूँघट कै दुरि बैठी बिराजत बात बनी।

मृदु मंजू पदार्थ-भूषन सों सुलसै हुलसै रस-रूप मनी।।"[3]

घनानंद स्वयं अपने प्रिय को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि मैं तुमसे कितना प्रेम करता हूँ इसे शब्दों में कैसे व्यक्त करूँ? मैं नहीं कर सकता हूँ तथा करने की आवश्यकता भी नहीं क्योंकि तुम 'सुजान' हो। कुछ भी कह सकने में असमर्थ और चातक की भाँति बादल की ओर दृष्टि लगाये प्रिया का ध्यान सारे संसार से हटकर प्रिय की ओर ही लगा हुआ है।

"मन जैसे कछू तुम्हें चाहत है सु-बखनीयै कैसे सुजान ही हौ।

इन प्राननि एक सदा गति रावरे, बावरे लौं लगियै नित लौ।

बुधि और सुधि नैननि बैननि मैं करिबास निरंतर अंतर गौ।

उधरौ जग चाय रहे घनआनंद चातिक त्यौं तकिये अब तो।।

घनान्द का प्रेम इसलिए भी अनोखा है क्योंकि इसमें इनका अथवा इनकी इच्छा का कोई महत्व नहीं है बल्कि इनका सारा हृदय-व्यापार ही इनके प्रिय पर केंद्रित है। प्रेम को सामान्यतः आग का दरिया आदि कहा गया है। स्वयं घनानंद के समकालीन कवि बोधा प्रेम के विषय में कहते हैं कि –

"यह प्रेम को पंथ कराल महा, तलवार की धार पे धावनों है।"

परन्तु इस मान्यता के विपरीत घनानंद ने कहा है –

"अति सूधो सनेह कर मारग है जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं।
तहाँ साँचे चलैं तजी आपुनपो झझकैं कपटी जे निसाँक नहीं।
घनआनंद प्यारे सुजान सुनौ आईटी एक ते दुसरो आँक नहीं।
तम कौन धौ पाटी पढ़े हो लला मन लेहु पाई देहु छटाँक नहीं।।"

घनान्द की प्रेमानुभूति अद्भुत है, अद्वितीय है। ऐसा इसलिए है क्योंकि ये उनकी स्वभुक्त अनुभूति है न की किताबी अथवा सुनी-सुनाई। इनका पूरा जीवन ही प्रेम को समर्पित है। इस तरह से प्रेम के सागर में डूब कर प्रेम करने वाले शायद ही मिले। इनकी प्रेमानुभूति इतनी विलक्षण थी कि कृष्ण और ब्रज-भूमि के कण-कण से इन्हें इतना प्रेम था कि ये ब्रज की रज में लोटते हुए मरना चाहते थे। कहा जाता है कि नादिरशाह के सैनिक जब इन्हें मारने लगे तब इन्होंने उनसे मुस्कुराते हुए कहा था कि वे उन्हें तड़पा-तड़पा कर धीरे-धीरे मारें ताकि वह ब्रज की रज-रज में भली-भांति लोट कर मरें। प्रेम की ऐसी विलक्षण अनुभूति दुर्लभ है।

घनानंद की विरहानुभूति – घनान्द विरह के कवि के रूप में प्रसिद्ध थे। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भी इस सन्दर्भ में लिखा है वास्तव में इन्होंने संयोग के सुख को पूरी सम्पूर्णता के साथ भोगा है। संयोग की ये पूर्णता ही इनके वियोग वर्णन को प्रभावशाली बनाती है। संयोग में इन्हें जो तीव्र घनीभूत अनुभूति हुई उसी कारण इनका वियोग भी मर्मांतक सिद्ध हुआ। बिना संयोग के वियोग कैसे संभव है? संयोग के बिना वियोग के स्वर या तो काल्पनिक होंगे जो प्रभावहीन हो जाएँगे या फिर रहस्यात्मक। परन्तु घानन्द के साथ ऐसा नहीं था। इसलिये इनका वियोग अधिक प्रभावीशाली और प्रसिद्ध था क्योंकि इनकी विरहानुभूति वास्तविक और लौकिक है। इन्होंने सुजान से खुलकर प्रेम किया, पूर्ण रूप से स्वतंत्र एवं स्वछंद होकर इसलिए इनकी विरहानुभूति भी बहुत ही मार्मिक हुई। इस तरह ये विरहानुभूति की विलक्षणता के हिंदी साहित्य में एकमात्र कवि हैं। अपनी विरह की रचनाओं से ये हिंदी साहित्य के किसी भी काल के अन्य कवियों से भारी पड़ते हैं। इस मामले में छायावादी कवि भी इनसे पिछड़ जाते हैं क्योंकि उनका संयोग अपने आप में अपूर्ण है। इनकी विरह-वेदना में ऐसी ताप है जिसके ज़िक्र भर से जीभ में छाले पड़ जाए और न कहें तो हृदय विरह वेदना को कैसे सहे?

हिय ही मढ़ी घुटी रहौं तो दुखी जिय क्यौं करी ताहि सहै ।

कहिये किहि भाँति दसा सजनि अति ताती कथा रास्नानि दहै।

घनान्द के जीवनवृत्त को देखकर यह स्पष्ट हो जाता है कि सुजान के व्यवहार से इनके हृदय को बड़ी ठेस पहुँची और ये ठेस इतनी मर्मान्तक सिद्ध हुई की इनके जीवन की दिशा ही बदल दी। वियोग के कारणों और रूपों की विवेचना करते हुए डॉ० रामचन्द्र तिवारी ने अपने 'मध्ययुगीन काव्य साधना' नामक ग्रन्थ में लिखा है "इन सभी वियोगों में सबसे अधिकमर्मांतक विश्वासघात-जनित वियोग होता है। यह जीवन की धारा को बदल देता है। घनानंद का वियोग इसी कोटि का था। जिसने उनके जीवन की दिशा को ही बदल दिया। वे श्रृंगारी कवि से भक्त कवि हो गए।" घनानंद कभी भी सुजान की निष्ठुरता को

भुला नहीं पाए थे। इनका हृदय सुजान से फट जाता है, परन्तु वे उससे घृणा नहीं करते हैं। घनानंद विरहानुभूति की ताप में तपते रहते हैं। सुजान से मिला अपकार और उसके बाद भी उसके प्रति इनका प्रेम तथा इनके व्यक्तिगत प्रेम का राधा-कृष्ण की प्रेम-मूर्ति में विलय हो जाना, ये सब मिलकर इनके काव्य को विलक्षणता प्रदान करते हैं।

"तुम ही गति हौ तुम ही माटी हौ तुमहि पति हौ अति दीनन की।

नित प्रीति करौ गुन-हीनन सौ यह रीती सुजान प्रवीनन की।

बरसौ घनआनंद जीवन को सरसौ सुधि चातक छीनन की।

मृदुतौ चित के पण पै द्रित के निधि हौ हित कै रचि मीनन की ।।"

प्रस्तुत पद में कृष्ण या सुजान को अलग करना दुष्कर है। घनानंद के वियोग सम्बंधित पदों में इनके आत्मा की कातर ध्वनि सुनी जा सकती है। इनके पद ऐसे लगते हैं मानों सुजान के प्रति इनके सन्देश हों। ऐसा ही एक पद यहाँ दृष्टव्य है जिसमें निवेदन और उपालम्भ के स्वर कितने स्पष्ट हैं-

"पाहिले अपनाय सुजान सो, क्यौं फिरि तेह कै तोरियै जू।

निरधार आधार दै धार मझार दई गहि बाँह न बोरियै जू।
घनआनंद अपने चातिक को गन बंधी लै मोह न छोरियै जू
रस प्याय कै ज्वाय, बढ़ाय कै आस, बिसास में यौं बिस घोरियै जू।।"[4]

घनानंद के अतीत की सुन्दर प्रेमानुभूति अब विरहानुभूति का शूल बनकर हृदय में धँस गई है। अतीत के संयोग की मधुर स्मृतियाँ विरहाग्नि में घृत का कार्य कर रहीं हैं। इसी सन्दर्भ का एक पद यहाँ दृष्टव्य है जिसमें एक रमणी अपने प्रिय को उसके अनीतिपूर्ण आचरण के लिए उपालम्भ देते हुए कहती है-

"क्यों हँसि हेरी हर्यो हियरा अरू क्यों हित कै चित चाह बधाई।

कहे को बोली सने बैननि चैननि मैं निसैन चढ़ाई ।

सो सुधि मो हिय में घनआनंद सालति क्यों हूँ काढ़ै न कढ़ाई।

मीत सुजान अनीति की पाटी इतै पै न जानिए कौन पढ़ाई।।"

वियोग में हृदय जलता है और आँखें बरसती है। इन आँखों को बरसना भी चाहिए क्योंकि इन्होंने ही तो प्रिय की सुन्दर छवि को हृदय तक पहुँचाया। हृदय का इसमें क्या दोष? पहले जो आँखें प्रिय की सुन्दर छवि को देख-देख कर प्रसन्न होती थी, तृप्त होती थी, वही आँखें अब दिन-रात अश्रु बहाती रहती है। आँखों की दीन दशा का घनानंद ने काफी अच्छा वर्णन किया है-

"जिनको नित नाइके निहारती ही तिनको रोवती हैं।

पल-पाँवड़े पायनी चायनी सौं अँसुवानि की धरणी हैं।

घनआनंद जान सजीवन को सपने बिन पाईए खोवति हैं।

न खुली-मुंदी जान परैं कछु थे दुखदाई जगे पर सोवती हैं॥"

इस संसार में सच्चा प्रेम करने वाले स्नेही लोग बहुत ही कम हैं। जैसे ही दो प्रेमियों के बीच के प्रेम की सुगंध का आभास लोगों को मिलता है वैसे ही लोग उनके विपरीत हो जाते हैं। माता-पिता, भाई-बंधु, नाते-रिश्तेदार आदि कोई भी साथ नहीं देता है। यह समाज तो सदा से प्रेम विरोधी रहा है पर शायद विधाता को भी सच्चे प्रेमियों से चिढ़ है, तभी तो वह वियोग की सेना सजाकर प्रेमी युगलों पर टूट पड़ता है

"इकतो जग मांझ सनेही कहाँ, पै कहूँ जो मिलाप की बास खिलै।

तिहि देखि सके न बड़ो विधि कूर, वियोग समाजहि साजि मिलै।"

विचार-विमर्श

हिंदी साहित्य की लगभग एक सहस्त्र वर्षों की दीर्घकालीन परंपरा को तीन वर्गों में विभाजित किया गया है, आदिकाल, मध्यकाल और आधुनिक काल। आदिकाल में आश्र्यदाताओं के लिए लिखा गया वीरतापूर्वक साहित्य है वहीं दुसरी ओर आधुनिक काल में लोक वाणी की अभिव्यक्ति है। मध्यकाल की चर्चा करें तो प्रवृत्ति प्रामुख्य के कारण यह दो भागों में विभाजित है, उत्तर मध्यकाल जिसमे भक्ति की प्रधानता है उसे भक्तिकाल कहा गया , दूसरा उत्तर मध्यकाल जिसमे रीति की प्रधानता है उसे रीतीकाल कहा गया। अन्य साहित्यिक कालों से भिन्न रीतिकाल में काव्य साध्य और साधन दोनो रहा। रीतिकवि काव्य रचना ही अपना सर्वप्रमुख उद्देश्य समझते थे जिसके कारण वे काव्य की उत्तकृष्टता बढ़ाने के लिए संस्कृत काव्यशास्त्रीय उपकरणों का प्रयोग करते थे। काव्यशास्त्रीयता प्रत्येक कवि में दिखती थी जिसका कारण वैभव प्राप्त करना था। इस रीतिनिरूपण शैली से भिन्न स्वच्छंद धारा के कवि भी हुए जिन्हे रीतिमुक्त नाम से भिन्न वर्ग में रखा गया। इसमें मुख्य हैं रसखान , आलम , बोधा , ठाकुर , घनानंद, द्विजदेव। इन सभी में से घनानंद श्रेष्ठ कोटि में आते हैं क्योंकि उनकी संवेदना सर्वाधिक साहित्यिक है। घनानंद कईं अर्थों में स्वयं को अन्य कवियों से भिन्न स्थान प्रदान करते हैं। घनानंद स्वानुभूति प्रेम , प्रेम गांभीर्य को काव्य विशेषता बनाते हैं और अनुभूति को बुद्धि से श्रेष्ठ सिद्ध करते हैं। प्रेम को सीधा और स्नेहपूर्ण मार्ग मानते हैं। यह विशेषता रीतिकाल से भिन्न एक स्वच्छंद प्रवृत्ति को व्याख्याहित करती है। रीतिकवि जहां सामाजिक परम्पराओं में बंधे थे वहीं घनानंद इन बंधनों की परवाह नही करते, प्रेम की स्वच्छंद और अंतर्मुखी अभिव्यक्ति करते हैं। रीति कवियों लिए जहां प्रेम एक काव्य साधन मात्र है वहीं घनानंद मानवीय प्रेम को ईश्वरीय प्रेम का लघुतम अंश मानते हैं। केवल भावात्मक रूप से नहीं काव्य शिल्प की दृष्टि से भी उन्होंने काव्यशास्त्रीय नियमो को न मानकर अपनी स्वच्छंद दृष्टि दिखाई। उनके काव्यों में फारसी कवियों , सखी संप्रदाय , सूफी संप्रदाय की रहस्य भावना का प्रभाव भी दिखाई देता है। प्रेमानुभूति को पहचानने की व्यापक अंतर्दृष्टि उन्होंने पाई है। अन्य काव्य प्रवृत्तियों के स्थूल शारीरिक प्रेम से भिन्न इनका प्रेम ईश्वरीय और सूक्ष्म है। उन्होंने विषम प्रेम को स्थापित कर उसे श्रेष्ठता प्रदान की है। रीतिकाव्य के रीतिनिरूपक शैली से स्वयं को पृथक कर निडरता व स्वच्छंद भाव से घनानंद एक विशेष स्थान ग्रहण करते हैं।

घनानन्द के इस प्रेम में नवीनता है, तीव्रता है, सरसता है, मार्मिकता है और सबसे अधिक सहृदय-संवेद्यता है । सच्चा कवि कहना सर्वथा समीचीन ज्ञात होता है। आचार्य शांडिल्य ने प्रेम की परिभाषा करते हुए लिखा है कि संयोग ने भी वियोग-सा बने रहने की प्रवृत्ति को प्रेम कहते हैं ।[3,4]

परिणाम

घनानंद (१६७३- १७६०) रीतिकाल की तीन प्रमुख काव्यधाराओं- रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त के अंतिम काव्यधारा के अग्रणी कवि हैं। ये 'आनंदघन' नाम स भी प्रसिद्ध हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने रीतिमुक्त घनानन्द का समय सं. १७४६ तक माना है। इस प्रकार आलोच्य घनानन्द वृंदावन के आनन्दघन हैं। शुक्ल जी के विचार में ये नादिरशाह के आक्रमण के समय मारे गए। श्री हजारीप्रसाद द्विवेदी का मत भी इनसे मिलता है। लगता है, कवि का मूल नाम आनन्दघन ही रहा होगा, परंतु छंदात्मक लय-विधान इत्यादि के कारण ये स्वयं ही आनन्दघन से घनानन्द हो गए। अधिकांश विद्वान घनानन्द का जन्म दिल्ली और उसके आस-पास का होना मानते हैं।

अनुमान से इनका जन्मकाल संवत १७३० के आसपास है। इनके जन्मस्थान और जनक के नाम अज्ञात हैं। आरंभिक जीवन दिल्ली तथा उत्तर जीवन वृंदावन में बीता। जाति के कायस्थ थे। साहित्य और संगीत दोनों में इनकी असाधारण गति थी।

कहा जाता है कि ये शाहंशाह मुहम्मदशाह रँगीले के दरबार में मीरमुंशी थे और 'सुजान' नामक नर्तकी पर आसक्त थे। एक दिन दरबारियों ने बादशाह से कह दिया कि मुंशी जी गाते बहुत अच्छा हैं। उसने इनका गाना सनने की हठ पकड़ ली। पर ये गाना सुनाने में अपनी अशक्ति का ही निवेदन करते रहे। अंत में बादशाह से कहा गया था कि यदि सुजान बुलाई जाय तो ये गाना सुनाएँगे। वह बुलाई गई और इन्होंने उसकी ओर उन्मुख होकर सचमुच गाया और ऐसा गाया कि सारा दरबार मंत्रमुग्ध हो गया। बादशाह ने आज्ञा की अवहेलना के अपराध में इन्हें दिल्ली से निष्कासित कर दिया। सुजान ने इनका साथ नहीं दिया। वहाँ से वे वृंदावन चले गए और निंबार्क संप्रदायाचार्य श्रीवृंदावनदेव से दीक्षा ग्रहण की। इनका सखीभावसूचक नाम 'बहुगुनी' था।

भगवान् कृष्ण के प्रति अनुरक्त होकर वृंदावन में उन्होंने निम्बार्क संप्रदाय में दीक्षा ली और अपने परिवार का मोह भी इन्होंने उस भक्ति के कारण त्याग दिया। मरते दम तक वे राधा-कृष्ण सम्बंधी गीत, कवित्त-सवैये लिखते रहे। कवि घनानंद दिल्ली के बादशाह मुहम्मद शाह के मीर मुंशी थे। कहते हैं कि सुजान नाम की एक स्त्री से उनका अटूट प्रेम था। उसी के प्रेम के कारण घनानंद बादशाह के दरबार में बे-अदबी कर बैठे, जिससे नाराज होकर बादशाह ने उन्हें दरबार से निकाल दिया। साथ ही घनानंद को सुजान की बेवफाई ने भी निराश और दुखी किया। वे वृंदावन चले गए और निंबार्क संप्रदाय में दीक्षित होकर भक्त के रूप में जीवन-निर्वाह करने लगे। परंतु वे सुजान को भूल नहीं पाए और अपनी रचनाओं में सुजान के नाम का प्रतीकात्मक प्रयोग करते हुए काव्य-रचना करते रहे। घनानंद मूलतः प्रेम की पीड़ा के कवि हैं। वियोग वर्णन में उनका मन अधिक रमा है।

ये प्रेमसाधना का अत्यधिक पथ पार कर बड़े बड़े साधकों की कोटि में पहुँच गए थे। यमुना के कछारों और ब्रज की वीथियों में भ्रमण करते समय ये कभी आनंदातिरेक में हँसने लगते और कभी भावावेश में अश्रु की धारा इनके नेत्रों से प्रवाहित होने लगती। नागरीदास जैसे श्रेष्ठ महात्मा इनका बड़ा संमान करते थे।

मथुरा पर अहमदशाह अब्दाली के प्रथम आक्रमण के समय, सं. १८१३ में, ये मार डाले गए। विश्वनाथप्रसाद मिश्र के मतानुसार उनकी मृत्यु अहमदशाह अब्दाली के मथुरा पर किए गए द्वितीय आक्रमण में हुई थी।[1]

घनानंद द्वारा रचित ग्रंथों की संख्या ४१ बताई जाती है-
सुजानहित, कृपाकंदनिबंध, वियोगबेलि, इश्कलता, यमुनायश, प्रीतिपावस, प्रेमपत्रिका, प्रेमसरोवर, व्रजविलास, रसवसंत, अनुभवचंद्रिका, रंगबधाई, प्रेमपद्धति, वृषभानुपुर सुषमा, गोकुलगीत, नाममाधुरी, गिरिपूजन, विचारसार, दानघटा, भावनाप्रकाश, कृष्णकौमुदी, घामचमत्कार, प्रियाप्रसाद, वृंदावनमुद्रा, व्रजस्वरूप, गोकुलचरित्र, प्रेमपहेली, रसनायश, गोकुलविनोद, मुरलिकामोद, मनोरथमंजरी, व्रजव्यवहार, गिरिगाथा, व्रजवर्णन, छंदाष्टक, त्रिभंगी छंद, कबित्तसंग्रह, स्फुट पदावली और परमहंसवंशावली।

इनका 'व्रजवर्णन' यदि 'व्रजस्वरूप' ही है तो इनकी सभी ज्ञात कृतियाँ उपलब्ध हो गई हैं। छंदाष्टक, त्रिभंगी छंद, कबित्तसंग्रह-स्फुट वस्तुत: कोई स्वतंत्र कृतियाँ नहीं हैं, फुटकल रचनाओं के छोटे छोटे संग्रह है। इनके समसामयिक व्रजनाथ ने इनके ५०० कवित्त सवैयों का संग्रह किया था। इनके कबित्त का यह सबसे प्राचीन संग्रह है। इसके आरंभ में दो तथा अंत में छह कुल आठ छंद व्रजनाथ ने इनकी प्रशस्ति में स्वयं लिखे। पूरी 'दानघटा' 'घनआनंद कबित्त' में संख्या ४०२ से ४१४ तक संगृहीत है। परमहंसवंशावली में इन्होंने गुरुपरंपरा का उल्लेख किया है। इनकी लिखी एक फारसी मसनवी भी बतलाई जाती है पर वह अभी तक उपलब्ध नहीं है।

घनानंद ग्रंथावली में उनकी १६ रचनाएँ संकलित हैं। घनानंद के नाम से लगभग चार हजार की संख्या में कवित्त और सवैये मिलतें हैं। इनकी सर्वाधिक लोकप्रिय रचना 'सुजान हित' है, जिसमें ५०७ पद हैं। इन में सुजान के प्रेम,

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 11, Issue 2, February 2024 |

रूप, विरह आदि का वर्णन हुआ है। सुजान सागर, विरह लीला, कृपाकंड निबंध, रसकेलि वल्ली आदि प्रमुख हैं। उनकी अनेक रचनाओं का अंग्रेज़ी अनुवाद भी हो चुका है।

हिंदी के मध्यकालीन स्वच्छंद प्रवाह के प्रमुख कर्ताओं में सबसे अधिक साहित्यश्रुत घनआनंद ही प्रतीत होते है। इनकी रचना के दो प्रकार हैं : एक में प्रेमसंवेदना क अभिव्यक्ति है, और दूसरे में भक्तिसंवेदना की व्यक्ति। इनकी रचना अभिधा के वाच्य रूप में कम, लक्षणा के लक्ष्य और व्यंजना के व्यंग्य रूप में अधिक है। ये भाषाप्रवीण भी थे और व्रजभाषाप्रवीण भी। इन्होंने व्रजभाषा के प्रयोगों के आधार पर नूतन वाग्योग संघटित किया है।

उनकी रचनाओं में प्रेम का अत्यंत गंभीर, निर्मल, आवेगमय और व्याकुल कर देने वाला उदात्त रूप व्यक्त हुआ है, इसीलिए घनानंद को 'साक्षात रसमूर्ति' कहा गया है। घनानंद के काव्य में भाव की जैसी गहराई है, वैसी ही कला की बारीकी भी। उनकी कविता में लाक्षणिकता, वक्रोक्ति, वाग्विदग्धता के साथ अलंकारों का कुशल प्रयोग भी मिलता है। उनकी काव्य-कला में सहजता के साथ वचन-वक्रता का अद्‌भुत मेल है। घनानंद की भाषा परिष्कृत और साहित्यिक ब्रजभाषा है। उसमें कोमलता और मधुरता का चरम विकास दिखाई देता है। भाषा की व्यंजकता बढ़ाने में वे अत्यंत कुशल थे। वस्तुतः वे ब्रजभाषा प्रवीण ही नहीं सर्जनात्मक काव्यभाषा के प्रणेता भी थे।

कलापक्ष

घनानंद भाषा के धनी थे। उन्होंने अपने काव्य में ब्रजभाषा का प्रयोग किया है। रीतिकाल की यही प्रमुख भाषा थी। इनकी ब्रजभाषा अरबी, फारसी, राजस्थानी, खड़ी बोली आदि के शब्दों से समृद्ध है। उन्होंने सरल-सहज लाक्षणिक व्यंजनापूर्ण भाषा का प्रयोग किया है। घनानंद ने लोकोक्तियों और मुहावरों के प्रयोग से भाषा सौंदर्य को चार चाँद लगा दिए हैं। घनानंद ने अपने काव्य में अलंकारो का प्रयोग अत्यंत सहज ढंग से किया है। उन्होंने काव्य में अनुप्रास, यमक, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा एवं विरोधाभास आदि अलंकारो का प्रयोग बहुलता के साथ हुआ है। 'विरोधाभास ' घनानंद का प्रिय अलंकर है। आचार्य विश्वनाथ ने उनके बारे में लिखा है-

> विरोधाभास के अधिक प्रयोग से उनकी कविता भरी पड़ी है। जहाँ इस प्रकार की कृति दिखाई दे, उसे निःसंकोच इनकी कृति घोषित किया जा सकता है।

छंद-विधान

छंद-विधान की दृष्टि से घनानंद ने कवित्त और सवैये ही अधिक लिखे हैं। वैसे उन्होंने दोहे और चौपाइयां भी लिखी हैं। रस की दृष्टि से घनानंद का काव्य मुख्यतः श्रृंगार रस प्रधान है। इनमें वियोग श्रृंगार की प्रधानता है। कहीं-कहीं शांत रस का प्रयोग भी देखते बनता है। घनानंद को भाषा में चित्रात्मकता और वाग्विदग्धता का गुण भी आ गया है।

कवित्त व सवैया

इन पदों में सुजान के प्रेम रूप विरह आदि का वर्णन हुआ है

नहिं आवनि-औधि, न रावरी आस,
इते पैर एक सी बाट चहों।

घनानंद नायिका सुजान का वर्णन अत्यंत रूचिपूर्वक करतें हैं। वे उस पर अपना सर्वस्व न्योछावर कर देतें हैं

रावरे रूप की रीति अनूप नयो नयो लागत ज्यों ज्यों निहारिये।
त्यों इन आँखिन बानि अनोखी अघानि कहू नहिं आनि तिहारिये ॥[5]

निष्कर्ष

घनानंद प्रेम के मार्ग को अत्यंत सरल बताते हैं, इन में कहीं भी वक्रता नहीं है।

अति सूधो सनेह को मारग है, जहाँ नेकु सयानप बांक नहीं।

कवि अपनी प्रिया को अत्यधिक चतुराई दिखाने के लिए उलाहना भी देता है।

तुम कौन धौं पाटी पढ़े हौ कहौ मन लेहूं पै देहूं छटांक नहीं।

कवि अपनी प्रिया को प्रेम पत्र भी भिजवाता है पर उस निष्ठुर ने उसे पढ़कर देखा तक नहीं।

जान अजान लौं टूक कियौ पर बाँचि न देख्यो।

रूप सौंदर्य का वर्णन करने में कवि घनानंद का कोई सानी नहीं है। वह काली साड़ी में अपनी नायिका को देखकर उन्मत्त सा हो जातें हैं। सावँरी साड़ी ने सुजान के गोरे सरीर को कितना कांतिमान बना दिया हैं।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 11, Issue 2, February 2024 |

स्याम घटा लिपटी थिर बीज की सौहैं अमावस-अंक उजयारी।
धूम के पुंज में ज्वाल की माल पै द्रिग-शीतलता-सुख-कारी ॥
कै छबि छायौ सिंगार निहारी सुजान-तिया-तन-दीपति-त्यारी।
कैसी फबी घनानन्द चोपनि सों पहिरी चुनी सावँरी सारी ॥

घनानंद के काव्य की एक प्रमुख विशेषता है- भाव प्रवणता के अनुरूप अभिव्यक्ति की स्वाभाविक वक्रता। घनानंद का प्रेम लौकिक प्रेम की भाव भूमि से उपर उठकर आलौकिक प्रेम की बुलंदियों को छुता हुआ नजर आता है, तब कवि की प्रियासुजान ही परब्रह्म का रूप बन जाती है। ऐसी दशा में घनानंद प्रेम से उपर उठ कर भक्त बन जाते हैं।

नेही सिरमौर एक तुम ही लौं मेरी दौर
नहि और ठौर, काहि सांकरे समहारिये

कवित्त

बहुत दिनान को अवधि आसपास परे,
खरे अरबरनि भरे हैं उठी जान को।
कहि कहि आवन छबीले मनभावन को,
गहि गहि राखति ही दै दै सनमान को ॥
झूटी बतियानि की पतियानि तें उदास हैव कै,
अब न घिरत घन आनंद निदान को।
अधर लगे हैं आनि करि कै पयान प्रान,
चाहत चलन ये संदेसों लै सुजान को ॥[5]

संदर्भ

1. "घनानंद". ब्रज.कॉम. मूल (पीएचपी) से 28 अक्तूबर 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि २० नवंबर २००९.
2. ↑ "लव पोयम्स ऑफ़ घनानंद". वैदिक बुक्स.नेट. मूल (एचटीएमएल) से 18 मई 2015 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि २० नवंबर २००९.
3. Amaresh Datta (1988). Encyclopaedia of Indian Literature: Devraj to Jyoti. Sahitya Akademi. pp. 1385–. ISBN 978-81-260-1194-0.
4. ↑ सिंह, बच्चन. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास. राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली. पन्ना 225-226.
5. ↑ Anandaghana (1991). Love Poems of Ghanānand. Motilal Banarsidass Publishe. p. 1. ISBN 978-81-208-0836-2.

SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor:
7.580

INTERNATIONAL JOURNAL
OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH
IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

+91 99405 72462 +91 63819 07438 ijmrsetm@gmail.com

www.ijmrsetm.com